B.A. (Hons.) Arts
Semester- II
Instrumental Music (Sitar)

Paper Code: BHI-122
Title: History and Theory
Unit: 2

Classification of Indian Musical Instruments

Prepared by
Dr. Geeta Singh

भारतीय संगीत वाद्यों का वर्गीकरण

पण्डित शारंगदेव कृत “संगीत रत्नाकर” ग्रंथ में भारतीय संगीत वाद्यों के चार प्रकार बताए गये हैं–

तत्
सुषिर
अवनद्ध
घन

वाद्यतंत्री ततं वाद्यं सुषिरंमतम् ।
चर्मावनद्धवदनमवनद्धं तु वाद्यते ॥
घनोमूर्तिः साऽभिधाताद्वधते यंत्र तद्धनम् ।

–संगीत रत्नाकर

तत् वाद्य

समस्त तारयुक्त वाद्यों को तत् वाद्यों की श्रेणी में रखा गया है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि सभी तार वाले वाद्यों को तत् वाद्य कहते हैं। तत् वाद्यों में स्वर उत्पति तार द्वारा होती है। भारतीय संगीत के कुछ प्रमुख तत् वाद्य हैं-

वीणा
सितार
तानपूरा
सरोद
बेला (वायलिन)
सारंगी
दिलरूबा

विचित्र वीणा

रूद्र वीणा

वीणा

वीणा भारत के लोकप्रिय वाद्ययंत्रों में से एक है जिसका प्रयोग प्राय: शास्त्रीय संगीत में किया जाता है। वीणा स्वर ध्वनिओं के लिये भारतीय संगीत में प्रयुक्त सबसे प्राचीन वाद्ययंत्र है। समय के साथ इसके कई प्रकार विकसित हुए हैं, जैसे, रुद्रवीणा,विचित्रवीणा इत्यादि।

सितार

सितार भारत के सबसे लोकप्रिय वाद्ययंत्र में से एक है, जिसका प्रयोग शास्त्रीय संगीत के साथ हर तरह के संगीत में किया जाता है। यह कहा जा सकता है कि सितार भारतीय तन्त्री वाद्यों का सर्वाधिक विकसित रूप है। सितार को मिजराफ़ से बजाया जाता है।

तानपूरा

तानपूरा अथवा "तम्बूरा" भारतीय संगीत का एक लोकप्रिय तत् वाद्य है, जिसका प्रयोग शास्त्रीय संगीत में सहायक वाद्य यंत्र के रूप में किया जाता है। तानपूरे में चार तार होते हैं। इस वाद्य को तर्जनी तथा मध्यमा अँगुलियों की सहायता से बजाया जाता है।

सरोद

सरोद खोखली लकड़ी का बना तत् वाद्य है। सितार के साथ सरोद भी उत्तर भारतीय संगीत का एक अत्यंत प्रचलित वाद्य है। सरोद का निचला सिरा गोलाकार होता है। ऊपर की ओर दंड की चौड़ाई कम होती जाती है। सरोद में ताँत और लोहे के तार लगे रहते हैं और इसके आगे का हिस्सा चमड़े से मढ़ा रहता है। सरोद को जवा से बजाते हैं।

बेला (वायलिन)

बेला (वायलिन)

बेला या वायलिन (violin) विश्व के सबसे लोकप्रिय वाद्ययंत्रों में से एक है जिसका प्रयोग पाश्चात्य संगीत एवं भारतीय संगीत में किया जाता है। तारवाले वाद्ययंत्रों (जैसे सारंगी, सितार आदि) में बेला सबसे छोटा, परंतु ऊँचे तारत्ववाला वाद्ययंत्र है। इसे गज से बजाया जाता है। गज से बजाये जाने के कारण कुछ विद्वान इसे वितत् वाद्य भी कहते हैं।

सारंगी

सारंगी भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक गायकी प्रधान वाद्य यंत्र है। संगीत रत्नाकर ग्रंथ में “शारंगी” नामक वीणा का उल्लेख है। कुछ विद्वानों का मत है कि पंडित शारंगदेव द्वारा आविष्कृत “शारंगी वीणा” ने ही आगे चलकर सारंगी का रूप लिया। इसे गज से बजाया जाता है। कुछ विद्वान इसे वितत् वाद्य कहते हैं।

दिलरूबा

दिलरूबा

दिलरूबा इसराज से मिलता-जुलता वाद्य है। इसका ऊपर वाला भाग सितार के समान और नीचे वाला भाग सारंगी के समान चौड़ा तथा चमड़े से मढ़ा रहता है। इसमें चार तार होते हैं। परदों की संख्या 15 से 17 होती है। मुख्य तारों के नीचे 22 तरब की तारें होती हैं। इसे गज से बजाया जाता है। कुछ विद्वान इसे वितत् वाद्य कहते हैं।

सुषिर वाद्य

जिन वाद्यों में वायु द्वारा ध्वनि उत्पन्न की जाती है वे वाद्य सुषिर वाद्य के अंतर्गत आते हैं। भारतीय संगीत के कुछ प्रमुख सुषिर वाद्य इस प्रकार हैं–

बांसुरी
शहनाई
हारमोनियम
क्लैरिनेट
शंख
तुरही

बांसुरी

बांसुरी सुषिर वाद्यों के अंतर्गत आने वाला प्रमुख और अत्यंत लोकप्रिय वाद्य है। यह प्राकृतिक बांस से बनायी जाती है। यह आकार में छोटी और हल्की होती है। इसमें ऊपर और नीचे छिद्र होते हैं। इन छिद्रों मे हवा फूकने से ध्वनि उत्पन्न होती है।

शहनाई

शहनाई

शहनाई एक सुषिर वाद्य है। इसमें स्वरों को उत्पन्न करने के लिए सात छिद्र होते हैं। इन छिद्रों को अंगुलियों के द्वारा दबाने और खोलने से विभिन्न स्वर उत्पन्न होते हैं। शहनाई की ध्वनि बांसुरी की अपेक्षा अधिक मधुर और गुंजायमान होती है। इससे मिलता-जुलता दक्षिण भारतीय वाद्य नादस्वरम् है।

हारमोनियम

हारमोनियम

हारमोनियम भी एक सुषिर वाद्य है। हारमोनियम को सरल शब्दों में "पेटी बाजा" भी कहा जाता है। यह केवल हवा के दबाव वाले प्रणाली पर काम करता है। वादक इसके फ्लैप को आगे-पीछे करके हवा भरते हैं और कीज़ दबाने पर उपयुक्त स्वर निकलता है। हारमोनियम का उपयोग शास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत, भजन, फ़िल्मी गीत, इत्यादि में किया जाता है।

क्लैरिनेट

क्लैरिनेट भारतीय वाद्य शहनाई से मिलता-जुलता एक पाश्चात्य वाद्य है। इसे सुषिर वाद्य की श्रेणी में रखा गया है। इसमें रीड का कार्य बांस की एक पत्ती से किया जाता है। यह रीड जर्मन सिलवर के फ्रेम में कसी हुई होती है जिसे "लिगेचर" कहते हैं। लिगेचर और रीड जिस स्थान पर लगे रहते हैं उसे "माउथ पीस" कहते हैं। इसे ही मुँह मे दबाकर क्लैरिनेट बजाई जाती है।

शंख

शंख

शंख एक आदि वाद्य है जो हमें प्रकृति द्वारा प्रदत्त है। इसका प्रयोग मंदिरों में पूजा के समय किया जाता है। प्राचीन काल में युद्ध का प्रारंभ शंख वादन से किया जाता था। इसमें हवा फूंककर ध्वनि उत्पन्न की जाती है, अतः इसे सुषिर वाद्यों की श्रेणी में रखा गया है।

तुरही

तुरही

तुरही लगभग चार हाथ लंबी धातु से बनी होती है, जो मांगलिक पर्वों के अवसर पर बजाई जाती है। इसमें कोई छिद्र नहीं होता, केवल हवा फूंककर उसके विभिन्न दबावों से ऊंचे-नीचे स्वरों की उत्पत्ति की जाती है। इसकी आकृति अर्धचंद्राकार होती है। फूंक से बजाने के कारण इसकी गणना सुषिर वाद्यों में की जाती है।

अवनद्ध वाद्य

ऐसे वाद्य जो खाल अथावा चमड़े से मढ़े हुए होते हैं, उन्हें अवनद्ध वाद्यों की श्रेणी में रखा जाता है। इस श्रेणी में दो प्रकार के वाद्य आते हैं। एक जो हाथ और अंगुलियों द्वारा बजाए जाते हैं तथा दूसरे जो छड़ी या अन्य यंत्र के प्रहार से बजाए जाते हैं। भारतीय संगीत के कुछ प्रमुख अवनद्ध वाद्य इस प्रकार हैं–

तबला
पखावज
डमरू
नगाड़ा

तबला

तबला

तबला भारतीय संगीत में प्रयोग होने वाला एक तालवाद्य है। यह लकड़ी के दो ऊर्ध्वमुखी, बेलनाकार, चमड़ा मढ़े मुँह वाले हिस्सों के रूप में होता है, जिन्हें रख कर बजाये जाने की परंपरा के अनुसार "दायाँ" और "बायाँ" कहते हैं। इसका प्रयोग गायन-वादन-नृत्य इत्यादि में ताल की संगति के लिए सहयोगी वाद्य के रूप में किया जाता है, साथ ही इसने एकल वादन के रूप में प्रसिद्धि पायी है।

पखावज

पखावज एक अवनद्ध वाद्ययंत्र है। आकार में यह मृदंग से छोटा होता है। पखावज एकल वाद्य मे काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है ।

डमरू

अवनद्ध वाद्य डमरू एक से दो बालिश्त लंबा दोनों सिरों पर चमड़े से मढ़ा होता है। इसके दोनों मुख रस्सी से कसे रहते हैं। बीच का हिस्सा एकदम पतला होता है जिसमें एक रस्सी अलग से लटकी रहती है तथा रस्सी के मुख पर घुंडी बनी होती है। हाथ को इधर-उधर घूमाने से घुंडीदार रस्सी डमरू के के दोनों मुखों पर आघात करती है, तो ध्वनि निकलती है। यह भगवान शिव का प्रिय वाद्य है।

नगाड़ा

नगाड़ा

प्यालीनुमा मिट्टी या लकड़ी की कुण्डी को चमड़े से मढ़कर नगाड़ा बनाया जाता है। दो नुकीली लकड़ियों से इसका वादन किया जाता है। इसे नक्कारा भी कहते हैं। इसका प्रयोग लोकगीत में होता है। यह भी एक अवनद्ध वाद्य है।

घन वाद्य

ऐसे वाद्य जो किसी धातु के बने हों तथा लकड़ी या हथौड़ी के आघात द्वारा अथवा आपस में संघर्ष द्वारा बजाये जाते हों, उन्हें घन वाद्यों की श्रेणी में रखा जाता है। भारतीय संगीत के कुछ प्रमुख घन वाद्य इस प्रकार हैं–

जल तरंग
घण्टा
घड़ियाल
} लकड़ी के यंत्र द्वारा बजाये जाने वाले वाद्य

झांझ
करताल
मंजीरा
} आपस में संघर्ष करके बजाये जाने वाले वाद्य

जलतरंग

जलतरंग

यह घन वाद्य का आधुनिक प्रकार है। यह चीनी मिट्टी की प्यालियों से बनता है। इन प्यालियों को जल से भरा जाता है तथा छोटे दण्ड से शास्त्रीय संगीत की राग-रागिनियां तथा लोकधुने बजायी जाती हैं। वादक प्यालियों को अपने सामने अर्धवर्तुलाकार रूप में रखते हैं एवं दण्डों के द्वारा बजाते हैं । प्यालियों की संख्या राग के लिए आवश्यक स्वरों के अनुपात में होती हैं।

घड़ियाल

घण्टा/घड़ियाल

एक से दो बालिश्त के व्यास वाला पीतल या अन्य धातु का गोलाकार टुकड़ा घण्टा कहलाता है, जिसे एक डोरी से लटकाकर लकड़ी के हथौड़े से आघात करके बजाया जाता है । इसका प्रयोग मंदिरों में पूजा-अर्चना के समय किया जाता है। आकृति की विविधता से घण्टे छोटे-बड़े होते हैं। लटकने वाले घण्टे, जो केवल डोरी हिला देने से बज जाते हैं, प्रायः देवालयों में लटके रहते हैं। घड़ियाल भी इसी परिवार का धातु निर्मित वाद्य है।

झांझ

झांझ

8 से 16 अंगुल व्यास तक के गोल टुकड़े झांझ कहलाते हैं। इनके मध्य में डोरी निकालकर तथा उसपर कपड़ा बांधकर हाथ से पकड़ने योग्य कर लिया जाता है तथा दोनों हाथों से पकड़कर एक-दूसरे को आघात करके बजाते हैं ।

करताल

लकड़ी के बने हुए 11 अंगुल लंबे गोल डण्डों को करताल कहते हैं। दोनों टुकड़े हाथ में ढीले पकड़कर बजाए जाते हैं, जिससे कट-कट की ध्वनि निकलती है।

मंजीरा

मंजीरा

झांझ का छोटा स्वरूप मंजीरा कहलाता है। प्रायः देवी-देवताओं की स्तुति के समय मंजीरे का वादन किया जाता है।

निष्कर्ष

प्राचीन आचार्यों द्वारा बताए गए वाद्यों के चारों प्रकार आज भी मान्य हैं। सभी वाद्यों का वर्गीकरण उनकी स्वरोत्पत्ति के आधार पर किया गया था। प्रथम दो वर्गों, तत् और सुषिर, को स्वर वाद्य के अंतर्गत रखा गया तथा दूसरे दो वर्गों, अवनद्ध एवं घन, को ताल वाद्य के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि "तत् वाद्य और सुषिर वाद्य" राग वाद्य हैं तथा "अवनद्ध वाद्य और घन वाद्य" ताल वाद्य हैं।

Thank You